व्यापार (Trade):- लाभ कमाने के उद्देश्य से किया गया वस्तुओं का क्रय विक्रय व्यापार कहलाता है। व्यापार में व्यापरी को लाभ तथा हानि होने की सम्भावना रहती है।

पेशा (Profession):- आय अर्जित करने के लिये किया गया कोई भी कार्य या साधन जिसके लिये पूर्व प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। पेशा कहलाता है।

व्यवसाय (Business):- ऐसा कोई वैधानिक कार्य जो आय या लाभ कमाने के उद्देश्य से किया गया हो व्यवसाय कहलता है। जिसके अन्तर्गत उत्पादन कार्य, वस्तुओं या सेवाओं का क्रय, विक्रय, बैंक, बीमा, परिवहन कम्पनियां आदि आते हैं। व्यापार व पेशा भी इसी में आते हैं।

मालिक (Owner):- वह व्यक्ति या व्यक्यिों का समूह जो व्यापार में आवश्यक पूँजी लगाते हैं व्यापार का संचालन करते हैं। व्यापार की जाखिम सहन करते है। और यदि मालिक एक व्यक्ति है तो वह एकांकी व्यापार (Proprietor) कहलाता है, और यदि मालिक दो या दो से अधिक व्यक्ति हैं तो साझेदार (Partners) कहलाते हैं। यदि बहुत से लोग मिलकर संगठित रुप में Company के रुप में कार्य करते हैं तो वे कम्पनी के अंशधारी (Share Holder) कहलाते हैं।

पूँजी (Capital):- व्यापार का स्वामी जो कच्चा माल या सम्पत्ति व्यापार में लगाता है। उसे पूँजी कहते हैं। व्यापार में लाभ होने पर पूँजी बढ़ती है और हानि होने पर पूँजी घटती है।

आहरण (Drawing):- व्यापार का स्वामी अपने निजी व्यय के लिये समय-समय पर अपने व्यापार में से जो रुपया या माल निकलता है वह उसका आहरण कहलाता है।

माल (Goods):- माल उस वस्तु को कहते हैं जिसका क्रय-विक्रय या व्यापार किया जाता है। जिसके अन्तर्गत कच्ची सामग्री या तैयार वस्तुएँ हो सकती हैं।

क्रय (Purchase):- पुनः विक्रय के उद्देश्य से खरीदा गया माल क्रय या खरीद कहा जाता है, व्यापार में नगद या उधार खरीदा जाता है।

विक्रय (Sales):- जो माल बेचा जाता है, उसे विक्रय कहते हैं। जो माल उधार बेचा है, उसे उधार विक्रय कहते हैं। और जो माल नगद बेचा जाता है, उसे नगद विक्रय कहते हैं। नगद व उधार का मिलकर कुल विक्रय (Turnover) कहलाते है।

Preview from Notesale.co.uk
Page 1 of 10

क्रय वापसी (Purchase Return):- जब खरीदे गए माल में से कुछ माल विभिन्न कारणों से वापस कर दिया जाता है तो उसे क्रय वापसी कहते हैं।

विक्रय वापसी (Sale Return):- जब बेचे हुए माल का कुछ माल विभिन्न कारणों से वापस कर दिया जाता है ता उसे विक्रय वापसी कहते हैं।

रहतिया (Stock):- किसी भी व्यवसाय से हमारे पास किसी मात्रा में जो माल उपलब्ध है, वह Stock कहलता है। माल के अन्त में जो माल बिना बिके रह जाता है। Closing Stock कहलाता है। और अगले साल के पहले दिन वही माल Opening Stock कहलाता है।

लेनदार (Creditor):- वह व्यक्ति या संस्था जो किसी अन्य व्यक्ति या संस्था को उधार माल या सेवायें बेचती हैं। या रुपया उधार देती है, ऋणदाता यानि लेनदार कहलाती हैं। उधार माल बेचने वाला Creditor कहलाता हैं।

देनदार (Debitor):- वह व्यक्ति या संस्था जो किसी अन्य व्यक्ति या संस्था से माल सेवायें या रुपया उधार लेती है। देनदार कहलाती है। संक्षेप में उधार माल खरीदने वाला देनदार कहलाता है। इस व्यक्ति को एक निश्चित समय बाद पैसा चुकाना होता है।

दायित्व (Liabilities):- ये सभी ऋण जो व्यापार को अन्य व्यक्तियों अथवा स्वामी अथवा स्वामियों के प्रति चुकाते हैं। दायित्व कहलाते हैं, ये दो प्रकार के होते हैं।